सैंट फ्रैंसिस और भेड़िया

सैंट फ्रैंसिस और भेड़िया

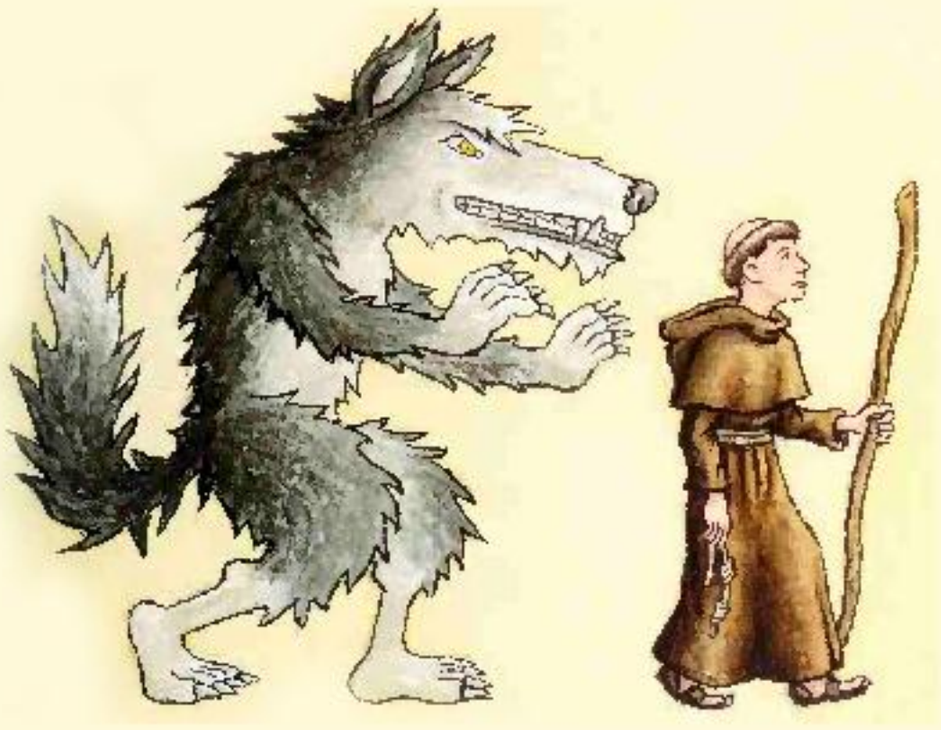

बहुत समय पहले जब इटली में शूरवीर सामंत युद्ध करते थे और राजा और रानियाँ विशाल महलों में रहते थे और धनी लोग अधिक धनी हो रहे थे और गरीब लोग सदा की भांति गरीब ही थे, फ्रैंसिस नाम के एक व्यक्ति वहाँ रहते थे.

फ्रैंसिस स्वयं भी एक समय बहुत धनी थे, लेकिन एक रात उनके सपने में ईश्वर आए और उनसे कहा कि वह अपना सारा धन लोगों में बाँट दें.

वह जहाँ भी जाते वहाँ लोगों को समझाते कि हर पुरुष, हर महिला और हर बच्चे को ईश्वर के बनाए उन सब जीवों से प्यार करना चाहिए जो धरती पर चलते हैं, आकाश में उड़ते हैं और सागर में तैरते हैं. वह पशुओं के साथ उनकी भाषा में बात कर सकते थे. उनके अच्छे कार्यों के लिए लोग उनका सम्मान करने लगे और वह एक सेंट बन गए.

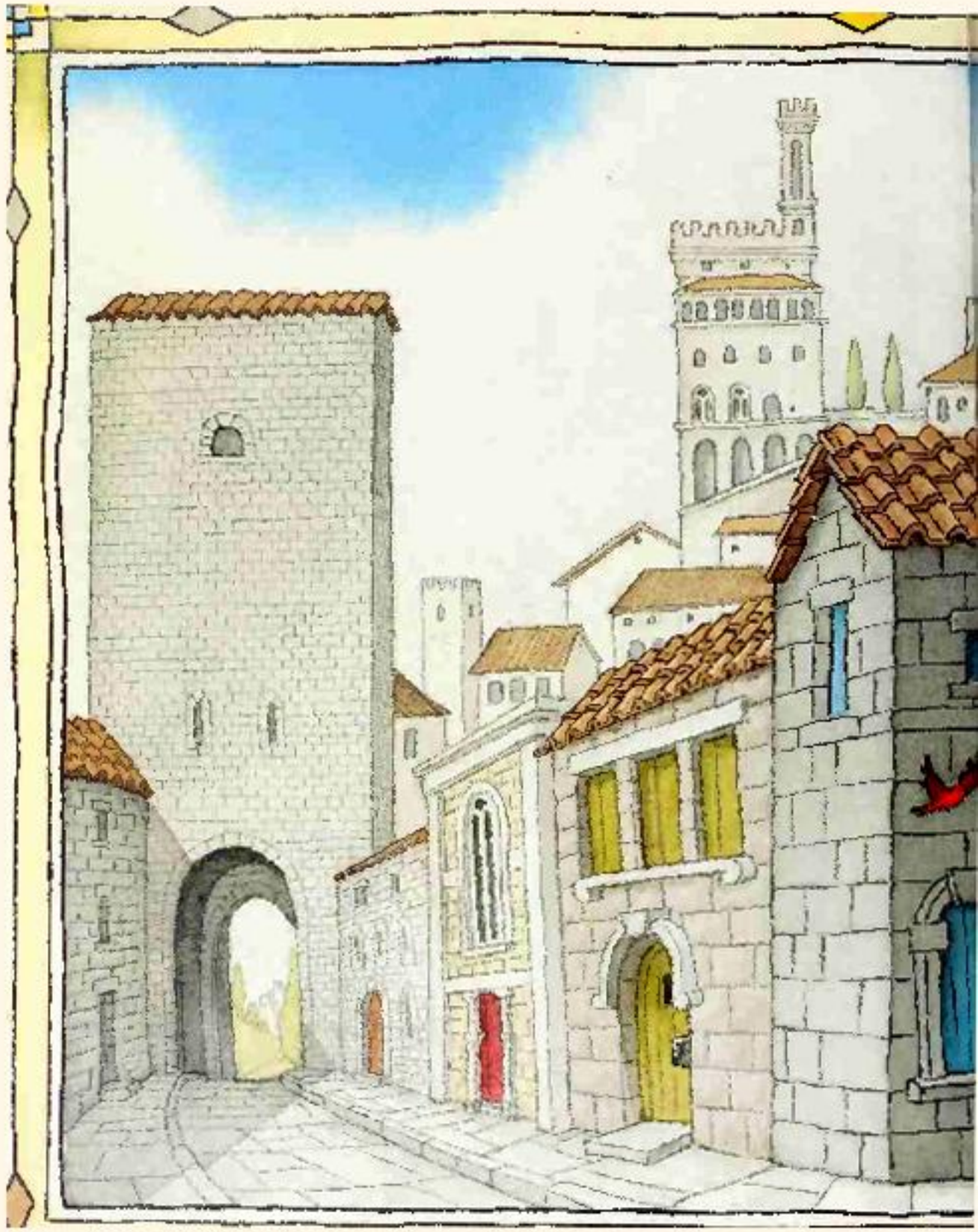

एक दिन सेंट फ्रैंसिस गुब्बियो नाम के संपन्न और व्यस्त नगर में आए. उन्होंने देखा कि नगर के रास्ते पूरी तरह वीरान थे

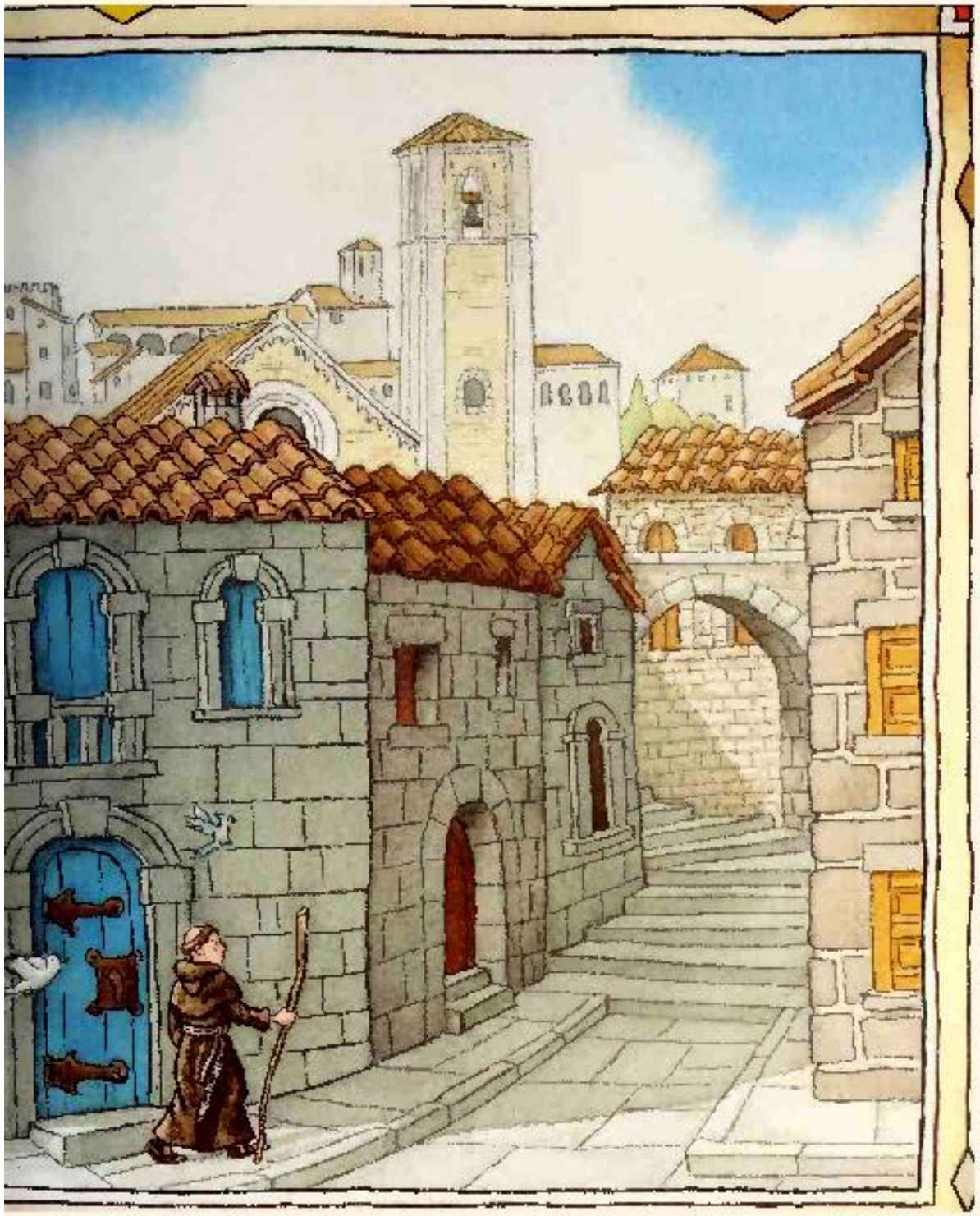

और इमारतों के दरवाज़ों पर ताले लगे हुए थे.

एक विशाल, भयंकर भेड़िये ने उस नगर में आतंक मचा रखा था. भेड़िया वहाँ की सारी भेड़ें और बकरियाँ खा गया और जब खाने के लिए भेड़ें और बकरियाँ न बचीं तो वह गड़ेरियों को खा गया. भेड़िया सारी मुर्गियाँ और गायें खा गया और जब खाने के लिए मुर्गियाँ और गायें न बचीं तो वह किसानों को खा गया.

“यह भेड़िया तो बहुत भयंकर है!” गुब्बियो की काउंटेस ने कहा. “हमें कुछ करना होगा!” उसने नगर-श्रेष्ठियों की एक सभा बुलाई.

“डरो नहीं!” उन्होंने कहा. “भेड़िये को मारने के लिए सबसे उत्तम कवच पहने, सबसे तेज़ तलवार और सबसे मज़बूत भाला लिए अपना सबसे शूरवीर सामंत हम भेज रहे हैं”.

“उसे मारो नहीं,” सेंट फ्रैंसिस ने कहा. “मैं जाऊँगा और उस भेड़िये से मिलूँगा.”

“दयालु भिक्षुक,” काउंटेस ने टोक कर कहा, “क्या आप सोचते हैं कि भेड़िया शांति से बैठ कर आपका उपदेश सुनेगा?”

“शूरवीर को भेजो!” सब चिल्लाये.

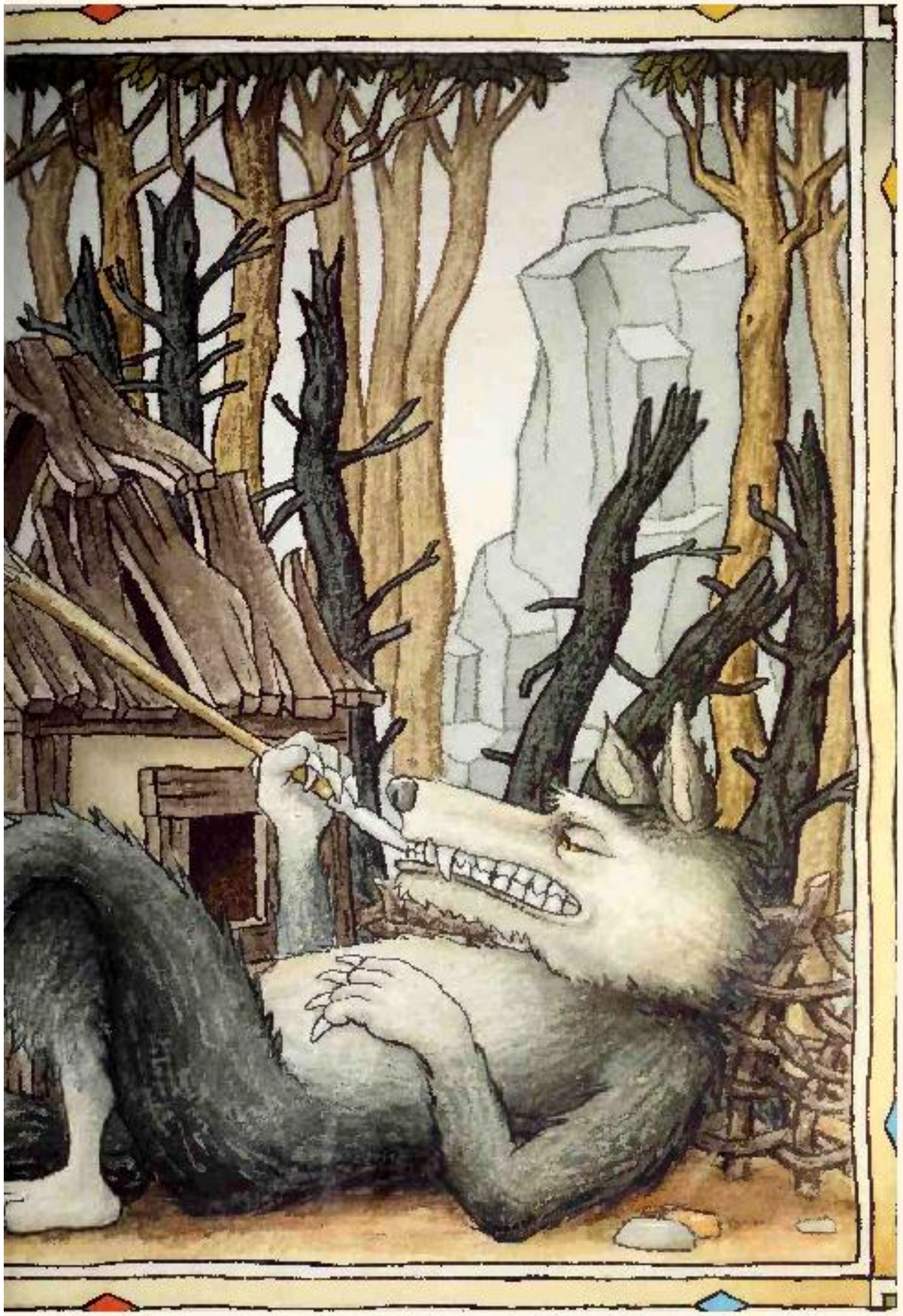

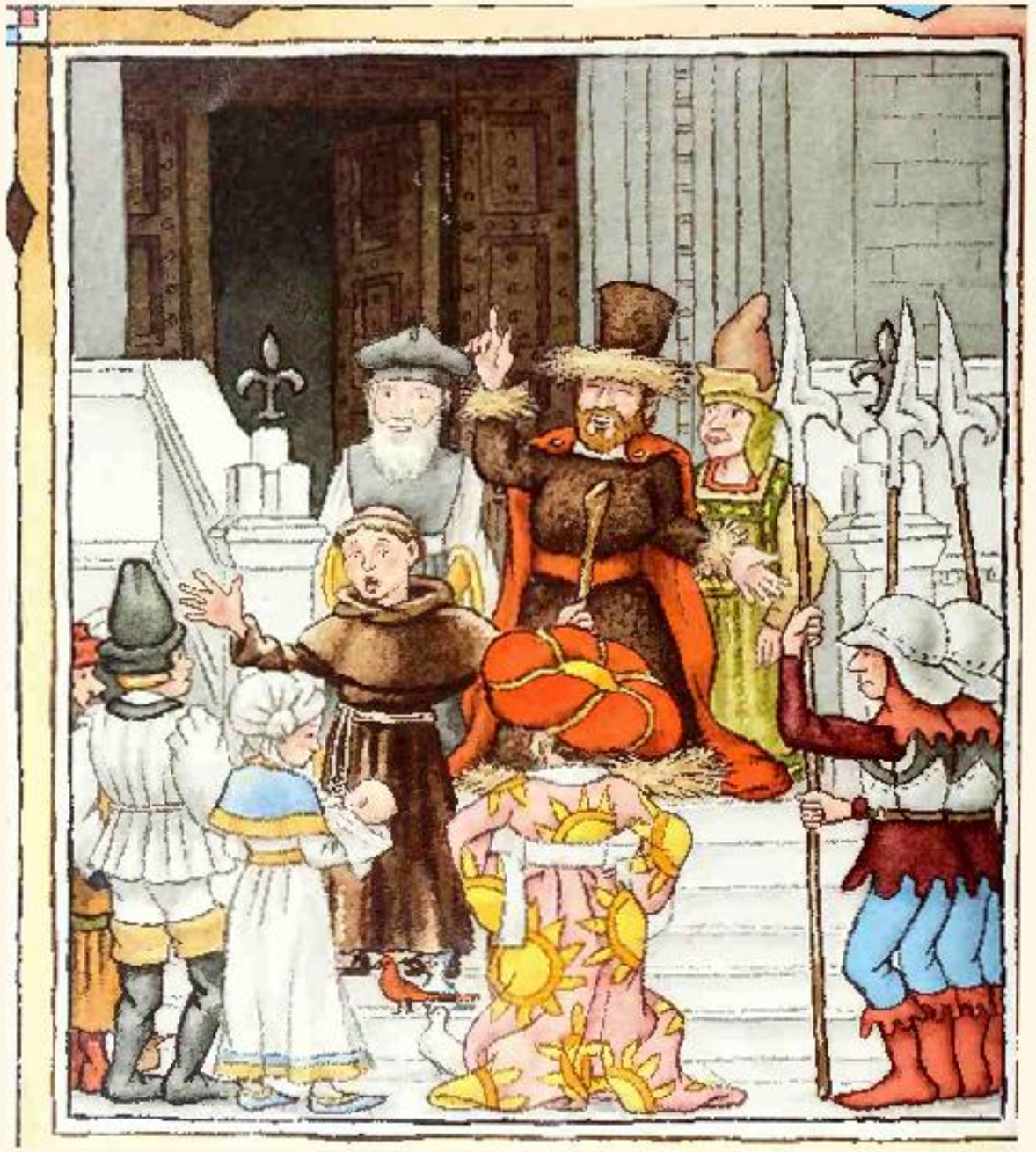

लेकिन शूरवीर सामंत लौट कर न आया. इसलिए नगर के लोग फिर नगर-श्रेष्ठियों के पास आए.

“डरो नहीं!” नगर-श्रेष्ठियों ने कहा. “भेड़िये को मारने के लिए हमारे समृद्ध नगर ने एक सेना का प्रबंध किया है.”

“भाइयो और बहनों, भेड़िये को न मारो,” सेंट फ्रैंसिस ने निवेदन किया.

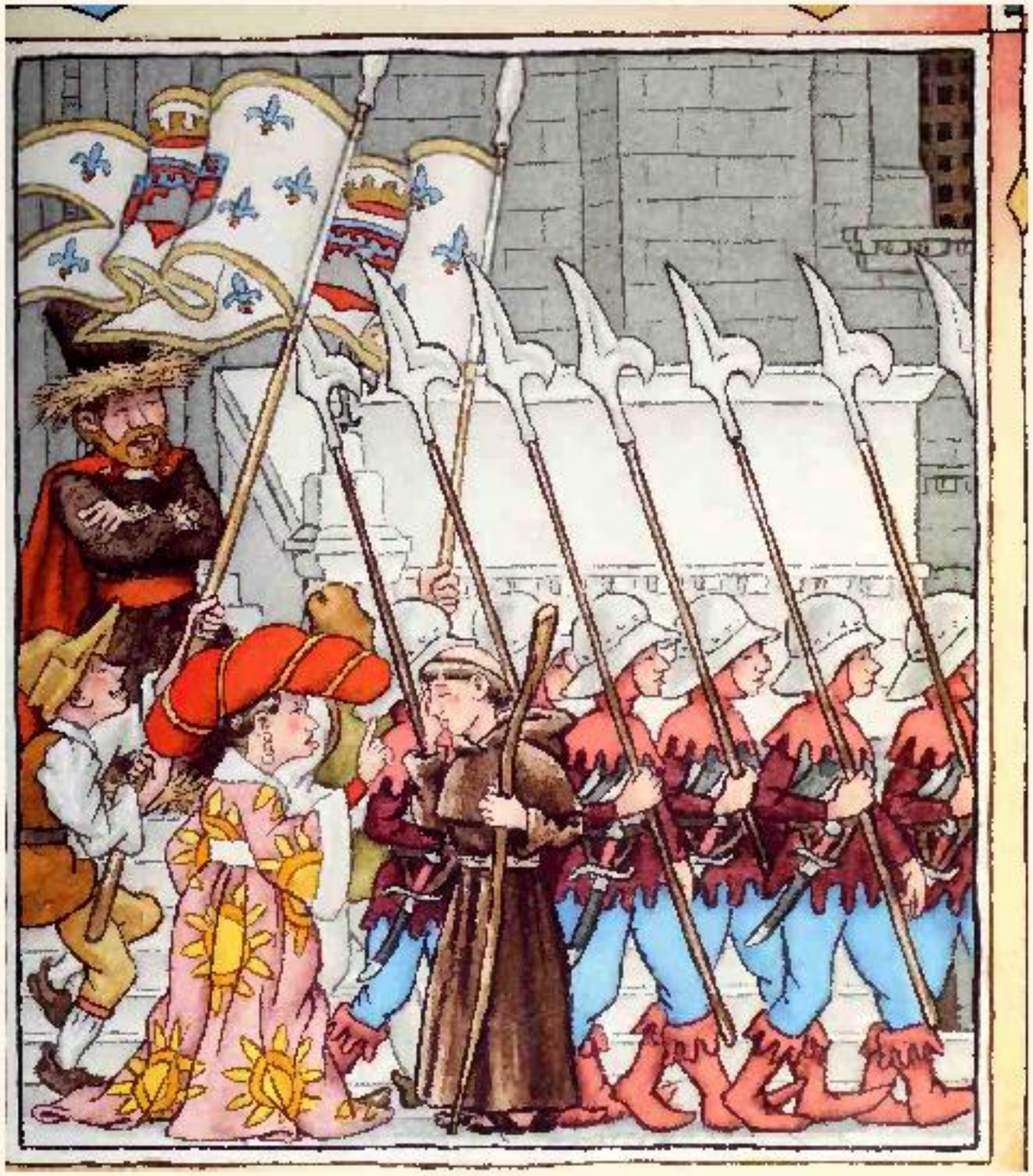

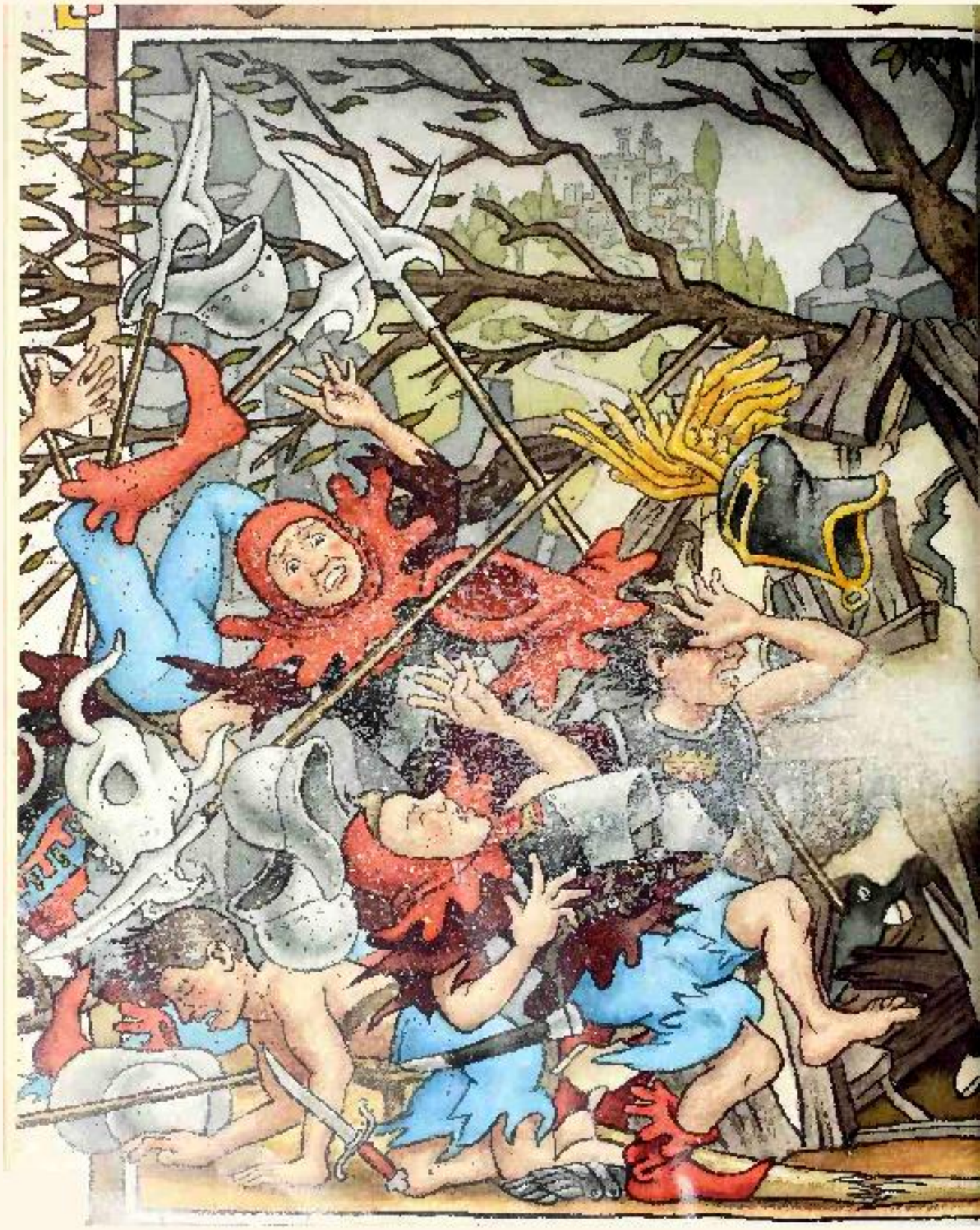

“दयालु भिक्षुक,” काउंटेस ने कहा, “अगर हम भेड़िये को नहीं मारेंगे तो वह हमें मार डालेगा.” जैसे ही सेना नगर से बाहर चली, लोगों ने गुब्बियो के झंडे लहरा कर जय-जयकार की.

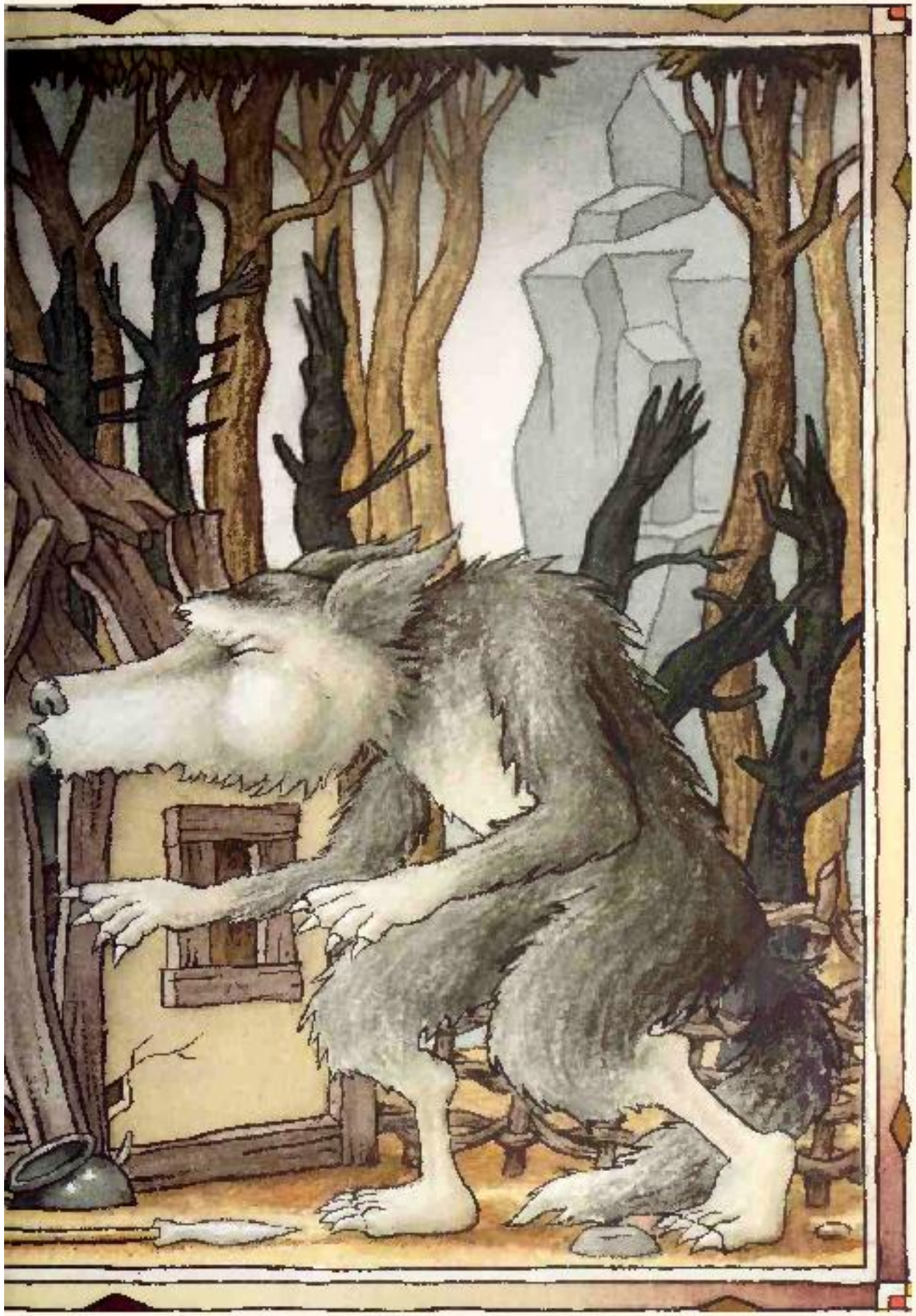

इस सेना को शूरवीर सामंत से अधिक सफलता नहीं मिली. नगर-श्रेष्ठियों ने एक बार फिर कहा, “डरो नहीं. हमारे समृद्ध नगर ने एक विशाल युद्ध यंत्र बनाने के लिए एक मेधावी अभियंता को काम पर रखा है.”

“हाहा!” काउंटेस ने कहा. “निश्चय ही एक भेड़िया ऐसे युद्ध यंत्र को हरा न पायेगा.”

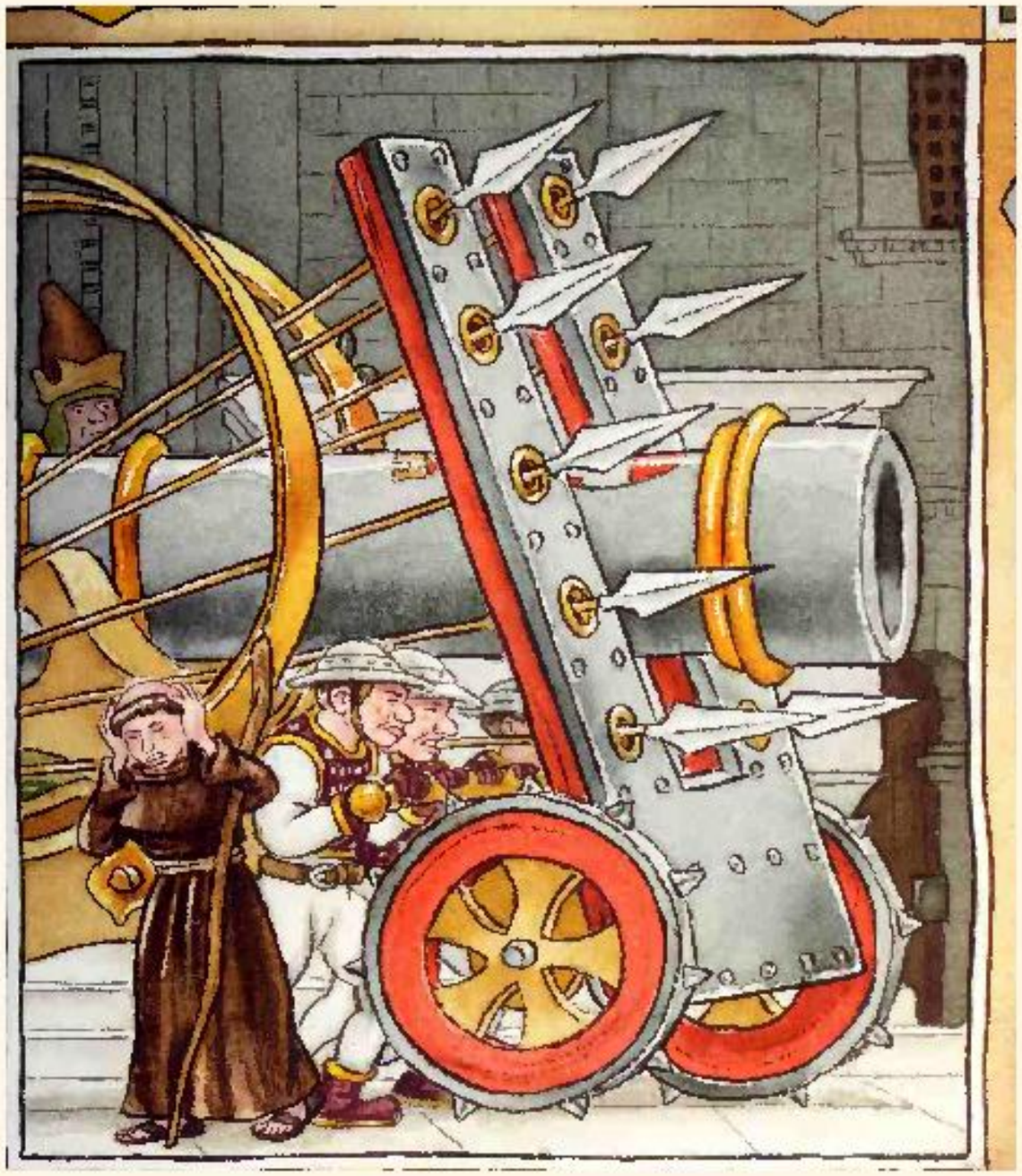

सेंट फ्रैंसिस ने कुछ कहने चाहा, परंतु उस विशाल यंत्र की घर्षण और झनझनाहट में उनकी आवाज़ दब कर रह गई.

युद्ध यंत्र भी शूरवीर सामंत और सेना के समान ही असफल रहा. गुब्बियो जो कभी समृद्ध नगर था अब कंगाल हो गया था. भेड़िये के साथ लड़ी लड़ाई के कारण लोगों को भूखे रहना पड़ता था. हर कोई भयभीत था.

बच्चों की सुरक्षा और पालन-पोषण करने के लिए काउंटेस उन्हें अपने महल में ले आई. जितने प्यार से सेंट फ्रैंसिस बच्चों की देखभाल कर रहे थे, वह देख कर काउंटेस को दुःख हुआ कि उसने अब तक उनकी बात क्यों न सुनी थी.

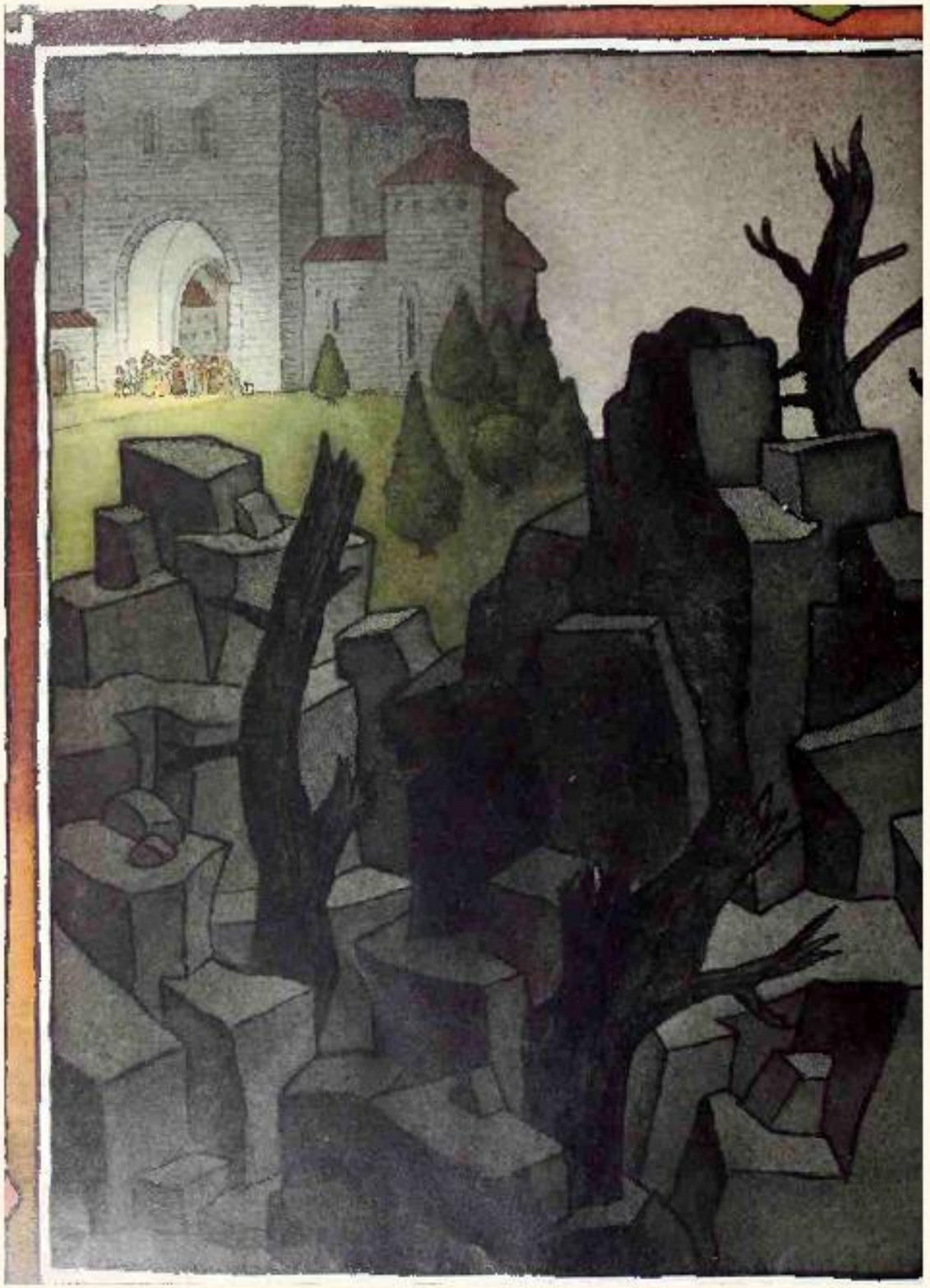

वह तुरंत नगर-श्रेष्ठियों से मिली.

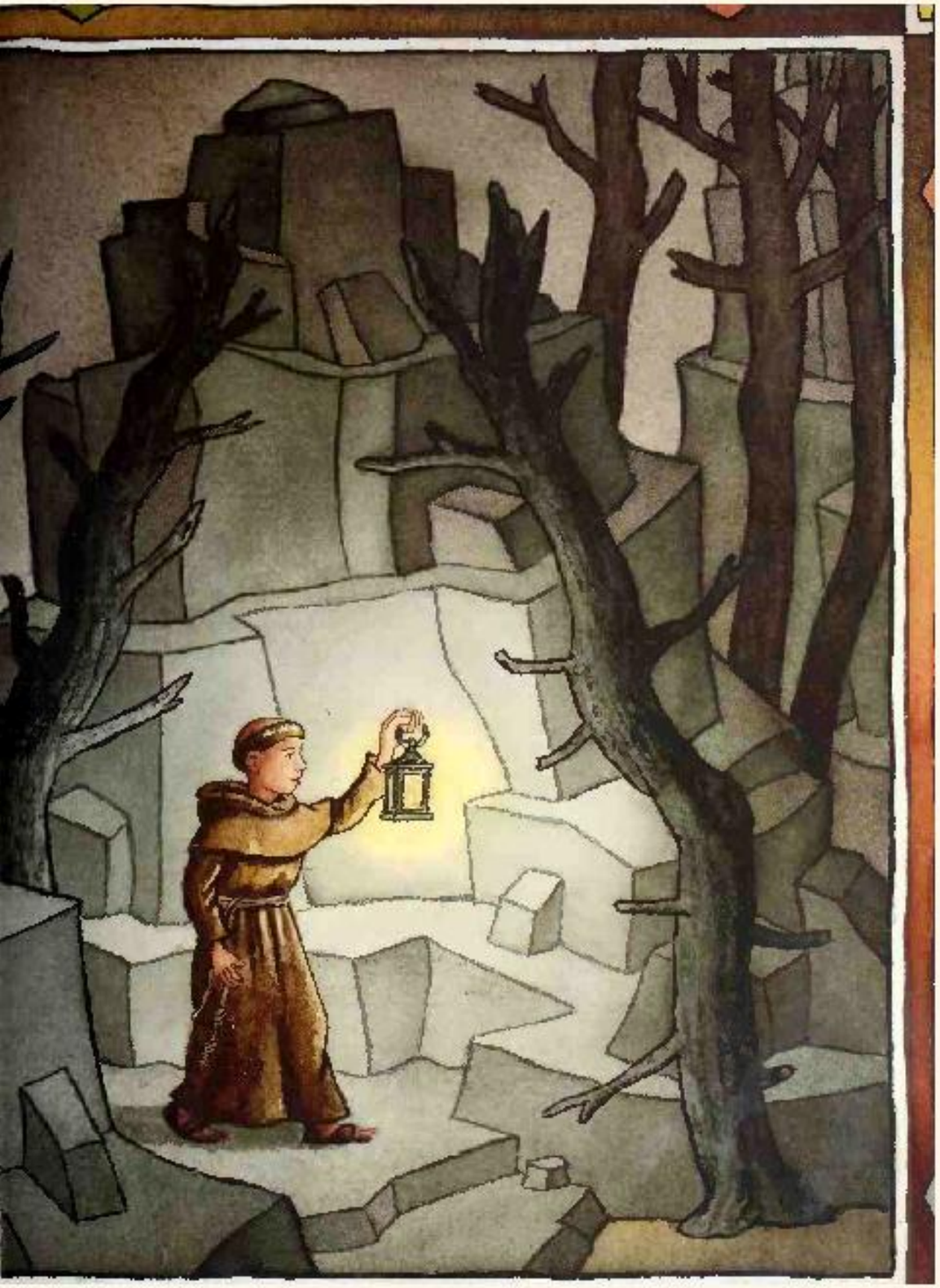

आखिरकार उन्होंने सेंट फ्रैंसिस से कहा कि वह भेड़िये से मिलें.

“सामने आओ, भाई भेड़िये,” उन्होंने शांति से भेड़िये की उसकी भाषा में पुकारा. “मुझ पर हमला न करना, भाई, क्योंकि मैं तुम से वैसे ही प्यार करता हूँ जैसे ईश्वर के बनाये हर जीव से करता हूँ. मैं तुम से सुलह करने आया हूँ.”

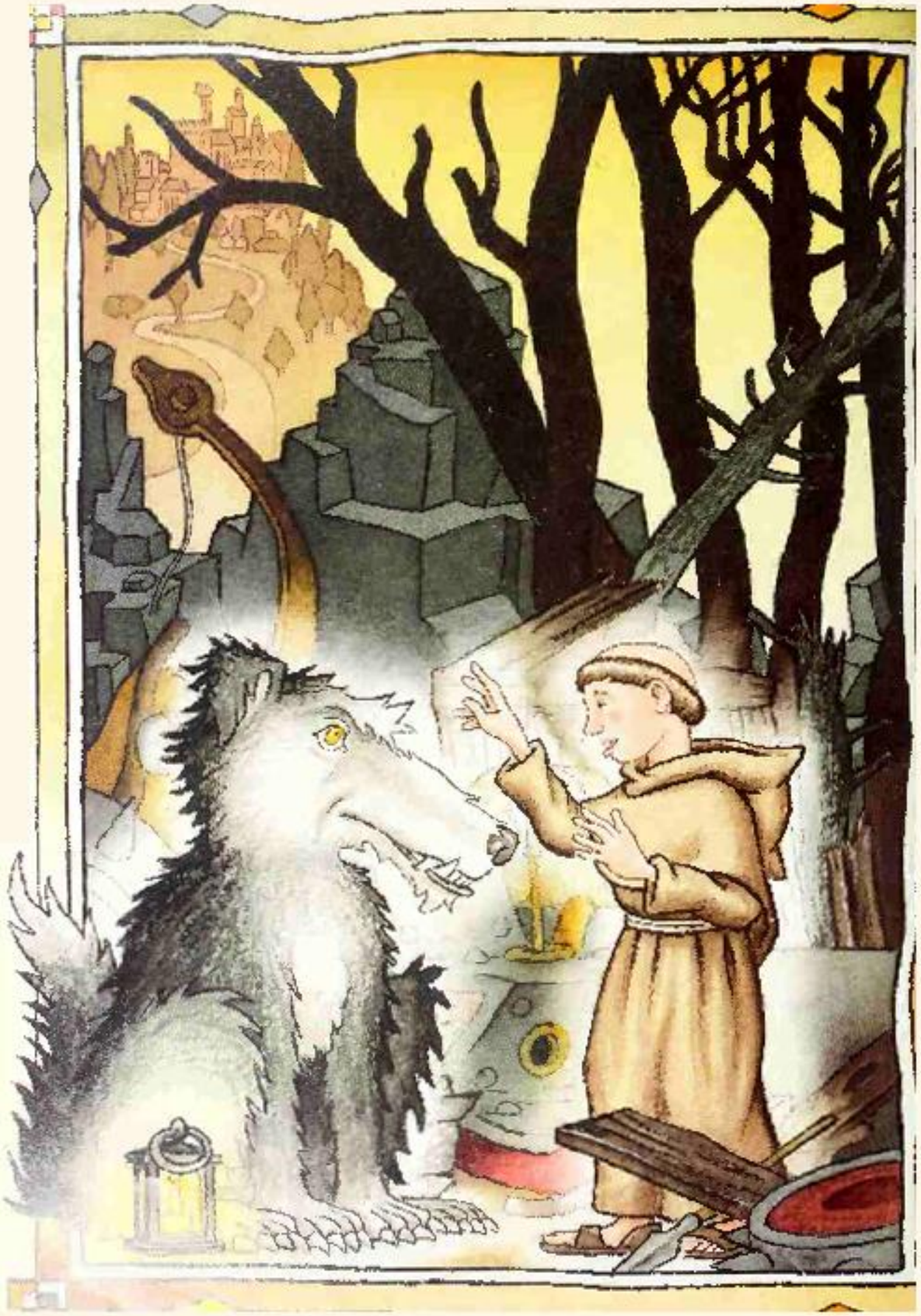

भयंकर भेड़िया, जो शूरवीर सामंत को मार कर खा गया था, जिसने सेना को अस्त-व्यस्त कर दिया था और विशाल युद्द यंत्र को हरा दिया था, वह एक सीधे-सादे आदमी को देखकर भयभीत हो गया क्योंकि वह भेड़ियों की भाषा में ईश्वर के प्रेम की बात कर रहे थे. वह भिक्षुक के प्यार और दया से अप्रभावित न रह पाया.

“गुब्बियो चलो और सब के साथ सुलह कर लो,” सेंट फ्रैंसिस ने कहा.

“क्या तुम वचन देते हो कि कभी भी किसी पर हमला न करोगे?” सेंट फ्रैंसिस ने पूछा. भेड़िये ने अपना सिर झुका दिया.

“भाई भेड़िये, अपना पंजा मुझे पकड़ाओ?” और भेड़िये ने अपना पंजा उनके हाथ में दे दिया.

सेंट फ्रैंसिस ने गुब्बियो के नागरिकों और भेड़िये को स्नेह के साथ अलविदा कहा और अन्य नगरों के लोगों को प्रेम और शांति का संदेश देने के लिए वहाँ से चले गए.

यह चमत्कार देख कर लोग आश्चर्य और प्रसन्नता से अभिभूत हो गए.

उस दिन के बाद से भेड़िया नगर में शांतिपूर्वक घूमता.

खाने के लिए हर दिन वह किसी अलग घर में जाता.

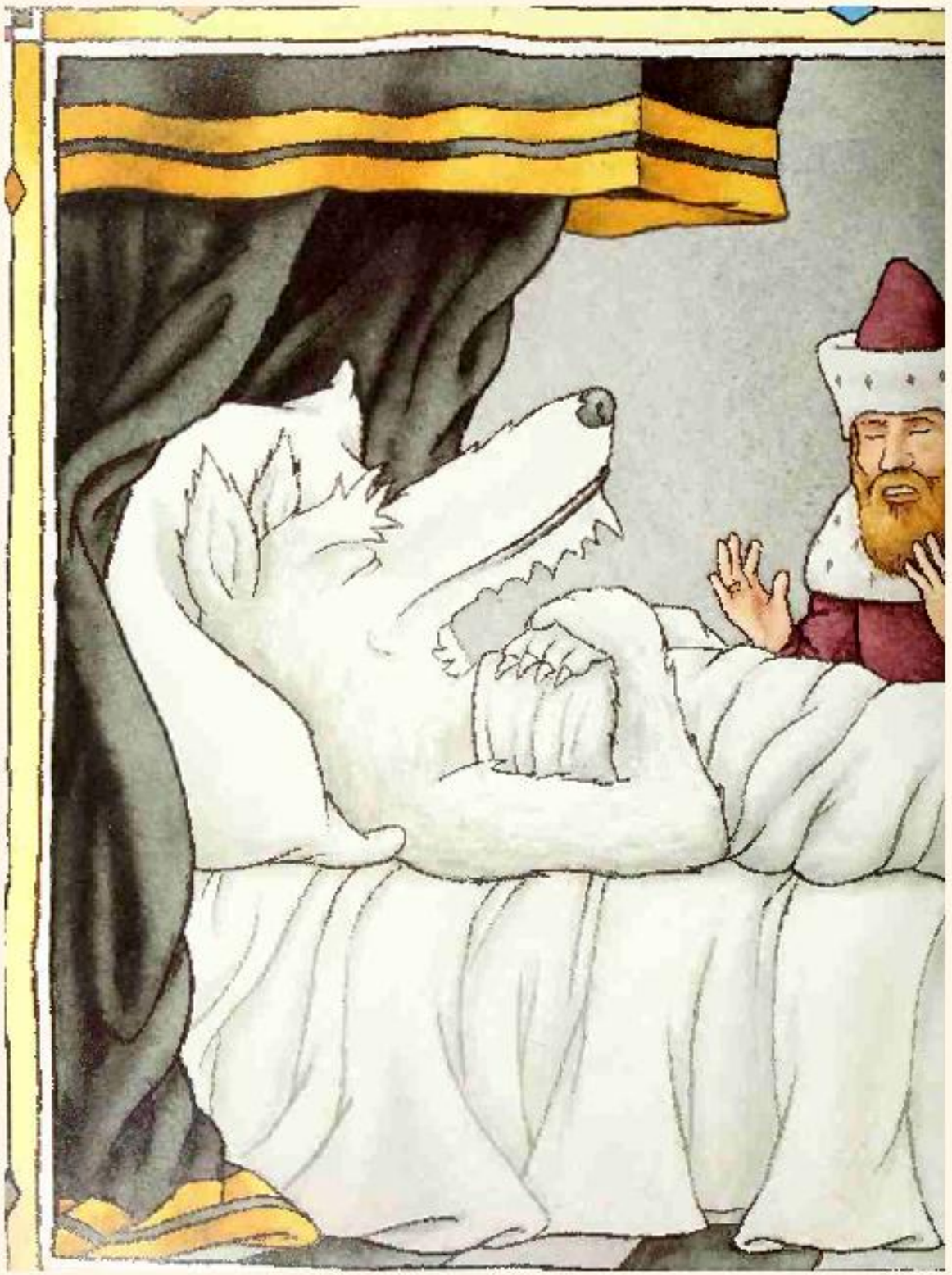

कई वर्षों बाद वृद्ध अवस्था के कारण भेड़िये की मृत्यु हो गई.

नगर के चौक के बीच में उसे दफना दिया गया.

गुब्बियो के निवासियों को भेड़िये और सेंट फ्रैंसिस की कमी महसूस हुई. जिस दिन सेंट फ्रैंसिस उस नगर में आये थे उस दिन की वर्षगांठ पर लोगों ने भेड़िये की कब्र पर एक मूर्ति स्थापित की.

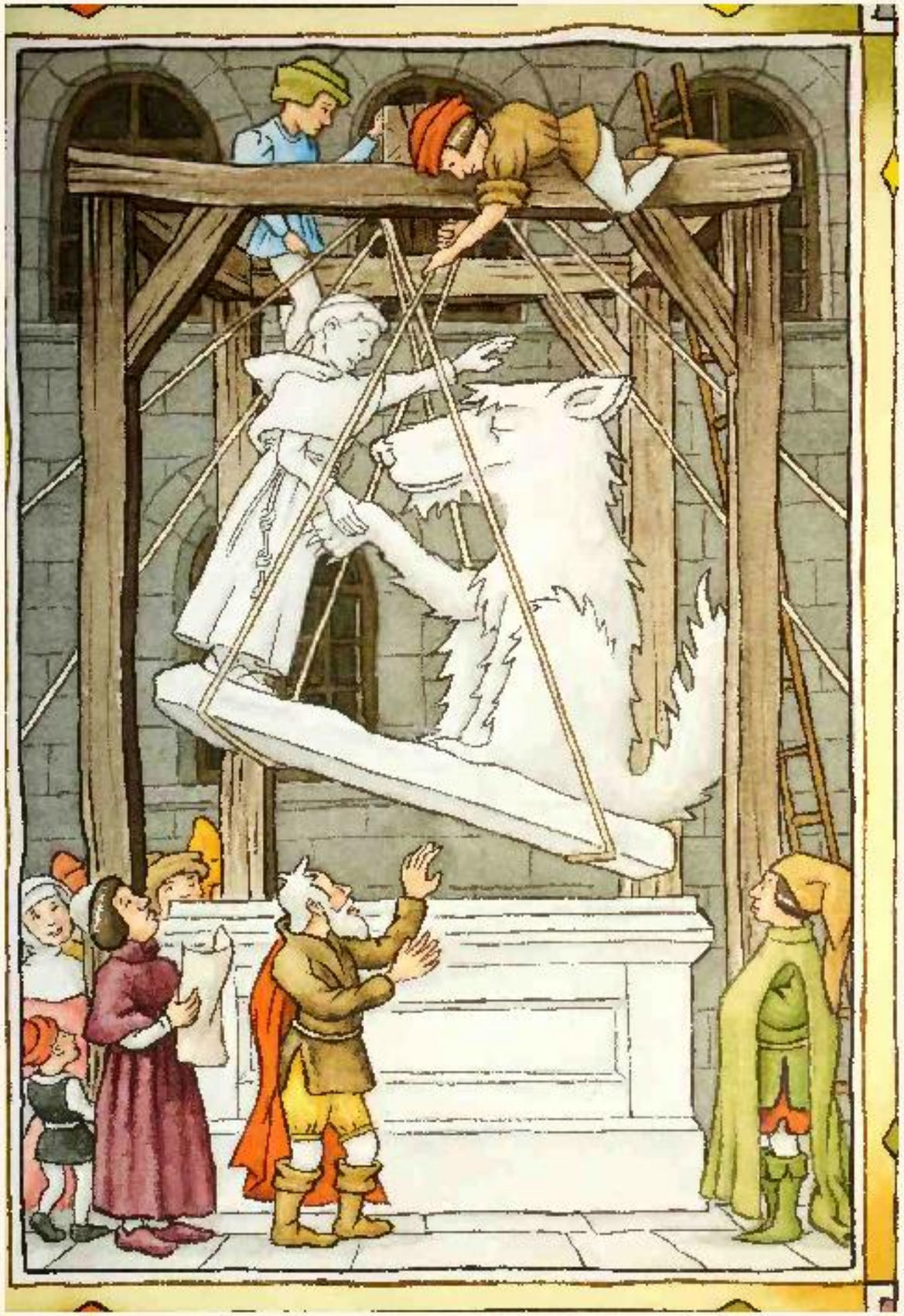

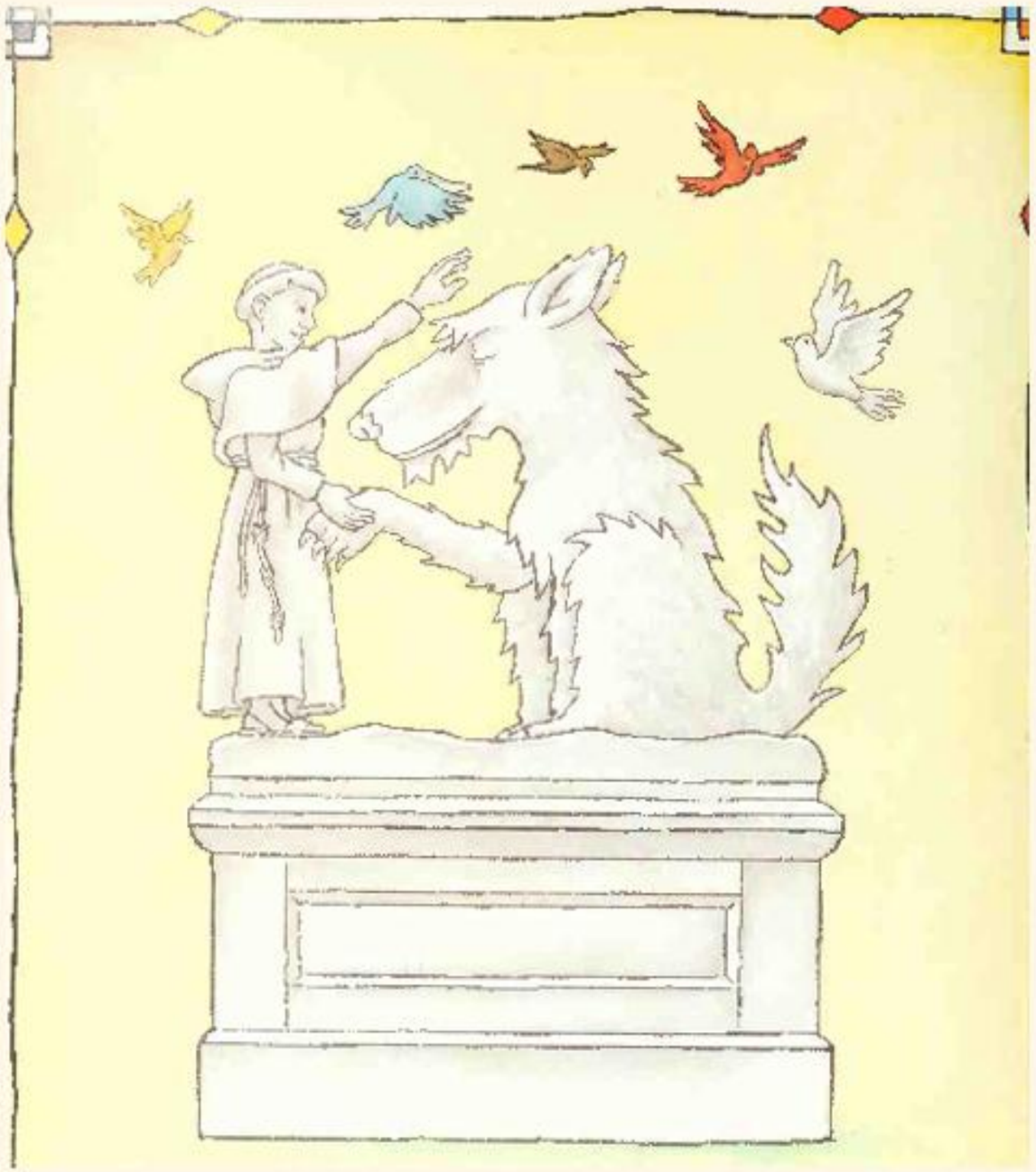

गुब्बियो में भेड़िया और सेंट फ्रैंसिस सदा साथ रहेंगे. और एक अद्भुत कहानी कि किस प्रकार दयालु भिक्षुक ने भेड़िये को प्यार से अपने वश में कर लिया लोगों को सदा स्मरण रहेगी.

समाप्त